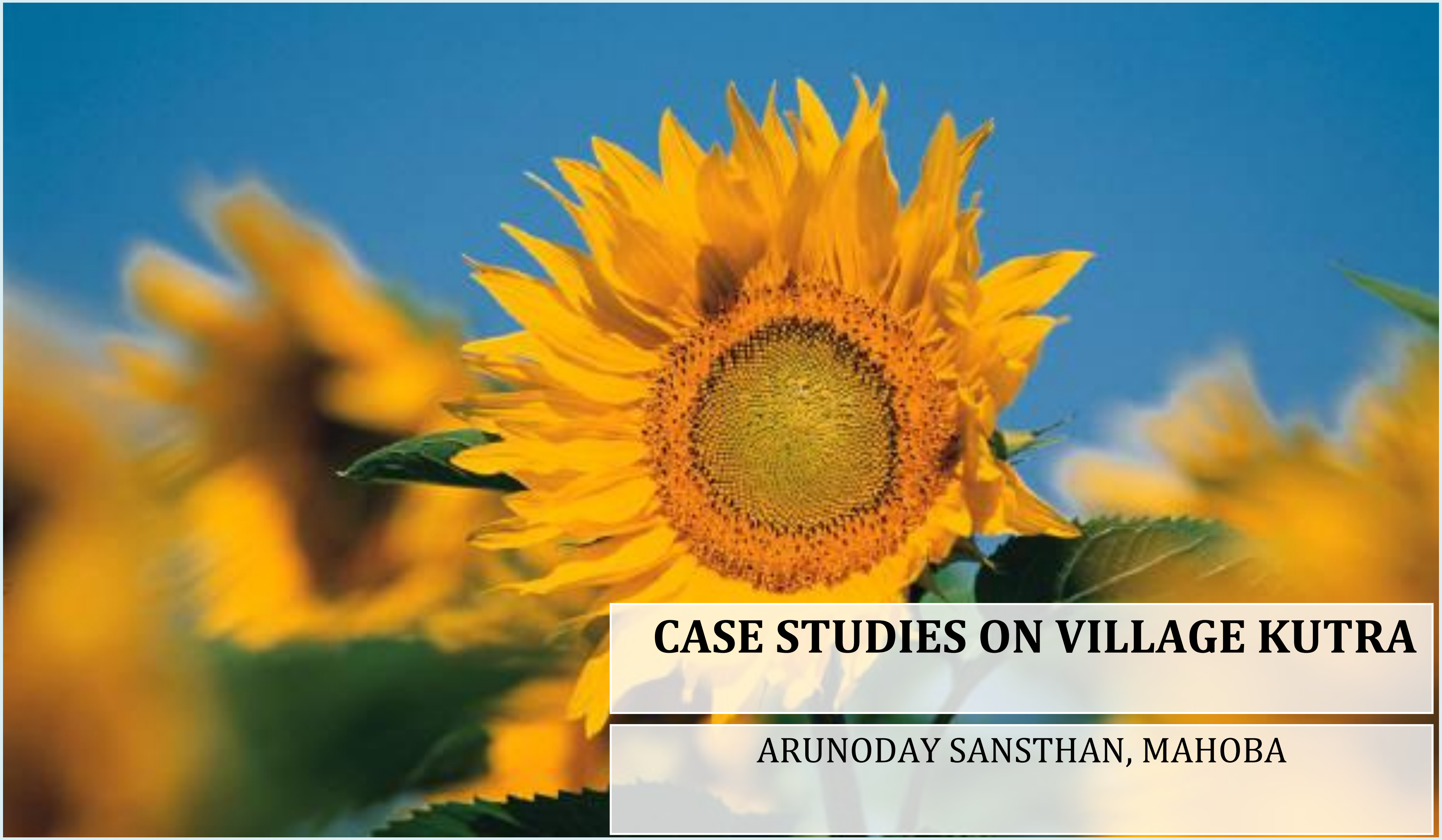

CASE STUDIES ON VILLAGE KUTRA

ARUNODAY SANSTHAN, MAHOBA

2014

परियोजना हस्तक्षेप के उपरान्त विकास खण्ड जैतपुर के ग्राम कुटरा के किसानो की स्थिति मे सकारात्मक परिवर्तन एक नजर में

ग्राम कुटरा जनपद महोबा के जैतपुर से मात्र चार किमी. पर स्थित जैतपुर विकास खण्ड का एक अति पिछड़ा गांव हुआ करता था । गांव में जाने के लिये स्थायी सम्पर्क मार्ग के अभाव के चलतें एवं गांव के दोनो ओर नाला होने के कारण पानी में से होकर जाना पड़ता था । बच्चे स्कूल जाते थे तो कपड़े पानी से निकलने के बाद पहनते थे महिलाओं और लड़कियों को बेलाताल में भीगे कपड़ो में ही आना पड़ता था क्योंकि और कोई रास्ता नहीं था ।

गांव की बसाहट प्राकृतिक है क्योंकि गांव के दोनों तरफ नाले है। और गांव बीच में है। गांव में कुल 64 परिवार है जिसमें 60 परिवार एस0सी0 समुदाय के है। और 4 परिवार ओ0वी0सी0 समुदाय के है। गांव में एक प्राथमिक विद्यालय है और 10 हेण्डपम्प एवं 01 कूप वस्ती में व 01 कूप खेत में है।

गांव में कुल 261 एकड़ जमीन है। जिसमें से 30 एकड़ जमीन टीलेनुमा बर्बाद पड़ी थी ।गांव में सर्वे के दौरान ज्ञात हुआ कि गांव में मिट्टी दोमट बलुई जिसमें पानी सीपेज अधिक है । तथा खेती करने योग्य जमीन में ढाल अधिक होने से पानी पूरा नालों में चला जाता था जिससे सिंचाई में खर्च अधिक आता था ।

वर्ष 2009 में भीषण सूखे के दौरान मई माह में प्रदान संस्था से श्री दीना दा का भ्रमण हुआ जिन्होने गांव की दूर्दशा को तकनीकी रूप से समझा एवं भविष्य में खेत समतलीकरण एवं मेडबन्दी आदि तकनीकी कार्यो के माध्यम से भविष्य में किसानो के आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावना जताई तथा इसी क्रम में प्रदान संस्था से प्रभात जी व अचिन्तोदा ने भ्रमण किया जिन्होने बताया कि यहॉ पर टीलेनुमा जमीन है। जहॉ पर छोटे–छोटे खेत तैयार करना पड़गें ।

गांव के चयनित पेच पांच न0 हार में जिसमें 105 एकड़ जमीन 39 किसानों की थी जिसमें 25•5 एकड़ जमीन ऐसी थी जिस पर बुबाई नहीं होती थी टीलेनुमा थी । ऐसे पैच में काम करने में आई0 एन0 आर0 एन0 एम0 परियोजना के माध्यम से किसानो के साथ कार्य करने हेतु सरदोराव जी टाटा ट्रस्ट का सहयोग मिला । जिसके तहत गांव में श्री सियाराम ग्राम विकास समिति का गठन किया गया तथा दो स्वयं सहयता समुह का गठन किया गया । परियोजना के माध्यम से किसानो को प्रत्यक्ष रूप से होने वाल सकारात्मक प्रभावो के सम्बन्ध में बताया गया गांव के लोगों का क्षमता वर्द्धन किया गया । पहले गांव में कोई भी किसान अपने खेतों के खण्ड नहीं करवाना चाहता था लेकिन निरन्तर बैठक के माध्यम से एवं समूहो एंव समिति का क्षमता वर्द्धन किया गया । जिसमें सर्वप्रथम गांव के सम्कू अहिरवार तैयार हुये जिन्होने अपने खेत के चार टुकड़े करवाये फिर इसके बाद किसानों को दिखाया गया ।

इसके बाद गांव के अन्य किसान तैयार हुये चयनित पैच में 9177मीटर मेढ़बन्धी कार्य किया गया एवं समतली करण का कार्य किया गया जिसमें जिस जमीन पर किसान कुछ नही करता था । उस जमीन पर कार्य किया गया और बुबाई योग्य जमीन तैयार करवाई ।

गांव में 25•5 एकड़ जमीन का सुधार किया गया जिस पर कभी खेती नहीं होती थी ।चयनित पैच में पहले 1 फसली खेती 80 प्रतिशत जमीन पर होती थी केवल 20 प्रतिशत जमीन ही दो फसली थी

परियोजना संचालन के बाद 105 एकड़ जमीन पर खेती हो रही है और पूरी जमीन पर दो फसली खेती की जा रही है।

मेढ़बन्धी के पहले चयनित पैच में व मुस्किल 10 प्रतिशत ही वर्ष का जल स्वयं होता था । जिसमें 22680 घन मी0 पानी ही स्टोर होता था । लेकिन कार्य के बाद 113400घन मी0 पानी स्टोर हो रहा है। जो 50 प्रतिशत है। इस प्रकार से जमीन निरन्तर उपजाऊ हो रही है। वर्ष 2011–12 से लगातार पानी खेतों में जमा हो रहा है। जिसमें निरन्तर उपज बढ़ रही है।

पहले गांव में सभी किसान एक ही फसल की बुबाई करते थे एवं एक ही फसल लगाते थे लेकिन अब चयनित पैच में 16 किसान फसल चक्र के अनुसार खेती कर रहे है। एवं 12 किसान मिश्रित फसल लगा रहे है। एवं नई तकनीक का प्रयोग कर रहे है। जिसमें s.r.i. विधि से चना मटर आदि की बुबाई कर रहे है। इसके अलावा पहले बीज शोधन नही करते थे अब बीज शोधन कर बुबाई करते है। तथा देशी खाद् का प्रयोग कर रहे है।

पहले व मुस्किल बीज ही निकलता था पहले खरीफ फसल में मुख्य फसलें थी अरहर,ज्वार 50एकड़ तिल 10 एकड़ उर्द 25 एकड़ मूॅग –5 एकड़ सन अमारी 15 एकड़ एवं अब प्रमुख फसलें है। मूॅगफली 26 एकड़ मूॅग 15 एकड़ उर्द 32 एकड़ तिल 8 एकड़ एवं अरहर 2 एकड़ व गन्ना 3 एकड़ में बुबाई हुई है।

पहले रबी फसल में चना ही बोया जाता था एवं आधी जमीन में अरहर लेकिन अब चना 25 एकड़मटर 18 एकड़ गेंहूॅ 48 एकड़ ,सरसों 10 एकड़ गन्ना –3 एकड़।

मुख्य फसलों में पहले उत्पादन खरीफ फसल में उर्द 1 एकड़ में 1•5 कुन्टल की और वर्तमान में 2 कुन्टल व मूॅग पहले 1थी अब 1•5 व तिल 1•5 कुन्टल थी और अब 2 कुन्टल

इस प्रकार रबी फसल में पहले गेंहॅ 6कुन्टल प्रति एकड़ और अब 9 कुन्टल व चना 2 कुन्टल अब 4 कुन्टल व यह 4 कुन्टल अब 5 कुन्टल जबा 8 कुन्टल अब 12 कुन्टल सरसों 50 किग्रा0 अब 070 किग्रा0 पर एकड़ उत्पादन हो रहा है।

अगर देखा जाये तो इस वर्ष सर्वे के आधार पर रबी फसल में गेंहूॅ 456 कुन्टल निकला हैं व मटर 70 कुन्टल व चना 48 कुन्टल निकला है। व सरसों 11 कुन्टल निकला है।

इस प्रकार से पिछले दो वर्षो से लगातार उत्पादन बढ़ रहा है। जहॉ पहले किसानों के पास वर्ष भर खाद्य सुरक्षा नहीं थी वह मजदूरी से पूर्ति करता था अ बवह लगातार पूर्ति कर रहा है। पहले उत्पादन बहुत कम था । और लागत ज्यादा थी । लेकिन अब उत्पादन बढ़ा है। और लागत कम हुई है। कारण अब किसान रूचि के साथ खेती कर रहा है।

सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात है कि इस गांव में किसान ने जल प्रबन्धन एवं फसल चक्र के महत्व को समझा है। और इसके गांव किसानों को जो और बाहरी संस्था एवं स्थानीय किसान आये उन्हें भी

छोटी–छोटी मेढ़बन्धी का महत्व बताया तथा वह अपनी छोटी –छोटी मेढ़बन्धी की बराबर मरम्मत करते है। यही कारण है कि पूरे पैच में 1 से 2 फुट ऊॅची मेढ़ भी सुरक्षित है।

केस स्टडी–1

नाम–मैयादीन अहिरवार **उम्र–48**

ग्राम –कुटरा **विकास खण्ड जैतपुर** **जनपद –महोबा**

परिवार में सदस्य –07 **कुल रकवा– 3•33 एकड़**

मैयादीन अहिरवार ग्राम कुटरा का प्रगतिशील किसान है यह शब्द सुनने में अब मैयादीन को ठीक लगने लगा है लेकिन इसके विपरीत तीन वर्ष पहले मैयादीन को लोग एक मजदूर के रूप में जानते थे ।तीन वर्ष पहले मैयादीन का मुख्य व्यवसाय मजदूरी कार्य था । कृषि कार्य में कोई रूचि नहीं थी कारण लगातार घाटे में जाना । मैयादीन का खेत जिस पैच में है वह पहले बड़ा ही दुर्गम था । जहॉ पानी वर्षा और बहकर चला गया क्योंकि खेत का ढाल दोनों तरफ बनें नालों में था जिस कारण वर्षा जल के साथ उपजाऊ मिट्टी भी बहकर निकल जाती थी । जिस कारण पैदावार नहीं होती थी । कृषि से आय मैयादीन को बहुत कम तथा कभी–कभी लागत भी नहीं निकलती थी क्योंकि कुल जमीन 3•33 में आधी जमीन एक फसली थी । जिस पर ज्वार व अरहर की खेती की जाती थी । बॉकी जमीन पर खरीफ फसल में घरेलू उपयोग हेतु 10 डिसमिल में सन् 10 डिसमिल में अभारी व उर्द ,मूॅग की खेती करता था । रबी फसल में चना की फसल करता था । दूनी खेत में ढाल होने की वजह से तथा मिट्टी वलुई दोमट होने की वजह से लीपेज अधिक है जिस कारण सिंचाई ज्यादा करनी पड़ती थी । जिससे अतिरिक्त खर्च पड़ता था ।

लागत एवं उत्पादक विवरण पहले का

खरीफ फसल रकवा –3•33 **रबी फसल –1 एकड़**

क0सं0	लगत	उत्पादन	लागत	उत्पादन
	6900=00	3250	7050=00	5000

मेढ़बन्धी के पहले मैयादीन को औसतन कृषि में खरीफ व रबी फसल में 5700 कु0 घाटा ही लगता था । अगर वर्षा अच्छी हो गई तो लागत व उत्पादन बराबर हो जाता था । यदि देखा जाये तो मेढ़बन्धी के पहले

कृषि से आप 0 भी और घाटे में ही मिल रहा था इसी कारण मैयादीन मजदूरी की प्राथमिकता देता था इसके बाद कृषि में अरूचि का प्रमुख कारण था उत्पादन न होना ।

परिवार में खाद्यान्य की आवश्यकता – मैयादीन के परिवार में 7 सदस्य है। जिनमें 5 बालिक व 2 नबालिक है । मैयादीन के वर्ष में 13 कुन्टल गेहूँ लगता हैं। लेकिन कृषि से व मुस्किल 4–5 कुन्टल का ही जोड़ पाता था । जो उत्पादन हुआ । उसको बैचकर गेंहूँ खरीदता था । इसके अलावा खाद्यान्य की पूर्ति मजदूरी करके करता था । वर्ष 3–4 माह दिल्ली जाकर 5000 कु0 बचाकर लाता था । जिससे कपड़े व पढ़ाई आदि का खर्च एवं खाद्यान्य पूर्ति करता था । इसके अलावा जो उधारी कर्ज हो जाता था टेक्टर जुताई एवं खाद् बीज आदि का चुकाता था ।

जब मैयादीन के खेत में 2012 में सरदोराव जी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से मेढ़बन्धी एवं समतलीकरण का कार्य करवाया गया जिसमें 38304रूपये खर्च हुये इसके बाद निम्न बदलाव आया जो ि कइस प्रकार है पहले रबी फसल में मैयादीन 1 एकड़ में खेती करता था वर्तमान में अपने पूरे रकवा 3•33 एकड जमीन में खेती कर रहा है।

फसल चक्र– फसल चक्र के अनुसार मैयादीन खेती कर रहा है जिससे एक खेत में 2013 में चना था । वहॅा पर मटर की ,जहॅा पर मटर थी । वहॅा पर गेंहू आदि का प्रयोग कर रहा है।

मिश्रित फसल – पहले रबी फसल में मैयादीन केवल चना की फसल ही लगाता था लेकिन अब चना ,मटर सरसों ,गेहॅू ,अरहर आदि लगा रहा है।

पहले मैयादीन को प्राकृतिक जल संवर्धन की समझ नही थी इसी कारण पहले अपने खेत के टुकड़े नहीं कराना चाहता था । छोटी –छोटी मेढ़बन्धी के लिये तैयार नहीं था लेकिन परियोजना के दौरान निरन्तर सम्पर्क एवं एक्सपोजर के माध्यम से मैयादीन का क्षमतावर्धन हुआ और वह प्राकृतिक जल संर्वधन के महत्व को समझा तथा आज मैयादीन गांव में गठित सियाराम ग्राम वि0 समिति के अध्यक्ष सर्व सम्मति से चुना गया कारण आज वह पूरे गांव के किसानों की छोटी–छोटी मेढ़बन्धी एवं वर्षा जल संचय का महत्व समझा रहा है। इसके अलावा जो बाहरी संस्थाओं के लगभग 10 संस्थाओं के किसानों को भी छोटी–छोटी मेढ़ो के महत्व को बताता है। तथा फसल चक्र एवं विक्षित फसल के महत्व को भी बताता है।

एस0 डब्लू 0 आई0 का प्रयोग –मैयादीन ने एस0आर0आई0 विधि से गेहूँ एवं चना में प्रयोग किया तथा कम बीज दर का प्रयोग कर एवं शोधन कर बीज की बुबाई की ।तथा गांव में अन्य किसानों का शोधन करवाया मैयादीन ने 1 वीघा में एस0आर0आई0से चना का इस वर्ष प्रयोग किया । जिसमें 13 किग्रा0 बुबाई कर 65 किग्रा0 चना निकला यदि इस वर्ष वर्षा अधिक न होती तो कम से कम उत्पादन 2 कु0 होता क्योंकि फसल अच्छी थी।

वर्ष 2011–2012 के 2013–2014 तक उत्पादन आंकलन

वर्ष 2011–2012 में खरीफ फसल में उर्द 50किग्रा0 मॅूग –40किग्रा0 एवं रबी फसल में चना 2 कुन्टल ,मटर 2कु0, सरसों –1•5 कुन्टल ,गेंहॅू –7कु0 निकला।

वर्ष 2012–13 में खरीफ फसल में मॅूगफली 5000 कु0 ही निकली एवं रबी फसल में चना–1•5कु0 ,गेंहॅू –9कुन्टल ,सरसों –2कुन्टल ,मटर–2 कुन्टल ,अरहर–10किग्रा0 आदि।

इस प्रकार से जहॉ मैयादीन की अब पूर्व वर्ष की खाद्यान्य की पूर्ति हो रही है। और मजदूरी करके अन्य खर्च करता है। अब कृषि को प्राथमिकता दे रहा है। एवं कृषि कार्य पहले इसके बाद मजदूरी कार्य इस प्रकार फसल उत्पादन की गणना करने पर अभी तक 51000 रूपये का उत्पादन खेत में हो चुका है। जहॉ पर किसी समय में बीज भी नहीं निकलता था।

केस स्टडी–2

नाम –सरिया रैक्वार **ग्राम –कुटरा** **रकवा–1•25**

परिवार में सदस्य –5

सरिया का मन पहले खेती में नहीं लगता था कारण सरिया का खेत ऊबड़–खाबड़ था टेक्टर वाले भी जुताई करने में कतराते थे सरिया के गैर मन से रबी फसल हो चाहे चाहे खरीफ फसल हो बीज छिड़ककर बोता था । कारण खेत से कुछ नहीं निकलता था । सरिया की नजर में खेती घाटे का सौदा था।इसी कारण सरिया अपने जबान लड़के के साथ बाहर 5 से 6 माह रहता था और वहॉ से जो कमाकर लाता था ।उसी से खर्च चलता था एवं इसके बाद गांव में मजदूरी करता था सबसे ज्यादा खराब जमीन सरिया की थी जहॉ पर बीज ही व मुस्किल निकल आये तो बहुत बड़ी बात थी । इन्ही सब स्थितियों को ध्यान में रखते हुये सरिया के खेत में सरदोराव जी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से मेढ़बन्धी एवं समतलीकरण 16565=00 कु0 का काम करवाया गया जिसमें फलस्वरूप खेत खेती करने योग्य बना ।

सरिया को वर्ष में 12 कुन्टल गेंहूॅ लगता था जिसकी पूर्ति खेती से नहीं होती थी । लेकिन अब इस वर्ष सरिया के खेत में 11 कु0 गेंहूॅ एवं सरसों –50 किग्रा0 निकला है। जिससे इसकी खुशी पूरे परिवार में आमतौर पर देखी जा सकती है। पिछले वर्ष 6कु0 गेंहूॅ निकला था एवं चना 40 किग्रा0 निकला था ।

जहॉ पहले वर्षा जल खेत की उपजाऊ मिट्टी लेकर वह जाता था । क्योंकि ढाल अधिक था लेकिन अब छोटी–छोटी मेढ़बन्धी एवं समतलीकरण के कारण खेत में 1350 घन मी0 पानी स्टोरेज हो रहा है। जिससे जमीन धीरे–धीरे उपजाऊ हो रही है। इसको देख भी जा सकता है। जहॉ पहले उत्पादन 0 था वहीं पिछले वर्ष 6 कुन्टल गेंहूॅ और इस वर्ष 11 कुन्टल गेंहूॅ की पैदावार हुई है।

वर्तमान समय में सरिया के खाद्यान्य की पूर्ति खुद की खेती से हो रही है। और अन्य खर्च मजदूरी से हो रहा है।

सरिया ने आई0 एन0 आर0 एम0 के महत्व को समझा है तथा मेढ़ों को निरन्तर ठीक करता रहता है। इसको देखा भी जा सकता है। कि तीन वर्ष में भी सभी मेढ़े सुरक्षित है। कारण किसान स्वयं रिपेयर करता है क्योंकि सरिया की समझ बनी है कि खेत में पानी रूकने से फायदा होता है।

सरिया की खेती में निरन्तर रूचि हो रही है। और सरिया कम बीज दर का प्रयोग भी कर रहा है। तथा उचित खाद् एवं शोधन कर बुबाई कर रहा है तथा लाईन से बुबाई कर रहा है।

जहॉ पर पहले बीज नहीं निकलता था । आज पूरे परिवार की खाद्यान्य की पूर्ति हो रही है। आज सरिया का पूरा परिवार खेती में सहयोग करता है। खेती के बाद मजदूरी करता है। खेती को प्राथमिकता के साथ करता है। तथा गांव में प्राकृतिक जल संवर्धन के महत्व को अन्य किसानों के साथ सरिया करता हैं।

केस स्टडी –3

नाम – गोविन्दी अहिरवार **रकवा–2•75**

गांव –कुटरा विकास खण्ड जैतपुर **जनपद – महोबा**

परिवार में सदस्य –07

गोविन्दी अहिरवार कुटरा का निवासी है। गोविन्दी पहले खेती तो करता था लकिन खेती को साईड में रखता था। पहले गोविन्दी खरीफ फसल व रबी फसल में छिड़ककर बुबाई करता था । जिससे कम उत्पादन होता था । खेत का ढाल नाले तरफ होने के कारण खेत की उपजाऊ मिट्टी नाले में बहकर चली जाती थी जिस कारण निरन्तर खेत की उत्पादकता कम हो रही थी गोविन्दी के परिवार में 7 लोग है। जिनकी जिम्मेदारी गोविन्दी की है । व गोविन्दी के दो लड़के है। एक लड़का विकलांग है। जो कुछ नहीं कर पाता एक लड़के के तीन बच्चे है। पूरे परिवार में वर्ष भर 15 कु0 गेंहू लगता हैं ।जिनकी पूर्ति खेती से नहीं हो पाती थी जिसकी पूति हेतु गोविन्दी दूसरों के खेतों पर काम करता था । तथा उसका लड़का भी जब कहीं जाकर पूरे वर्ष भोजन की व्यवस्था हो पाती थी । पहले आधी जमीन लगभग –1•5 एकड़ में अरहर,ज्वार करता था तथा शेष जमीन पर उर्द तिल आदि तथा रबी फसल में चना की फसल इस प्रकार से आधा रकवा एक फसली था । पहले उत्पादन बहुत कम निकलता था व मुस्किल उर्द 30–40 किग्रा0 व चना 1•2 कु0 निकलते थे ।अरहर व ज्वार मौसम पर निर्भर थी यदि वर्षा हुई और यदि कोई शेष न लगा तो 50किग्रा0 के लगभग अरहर व 1 कु0 के लगभग ज्वार हो जाती थी ।

इन्ही सभी समस्याओं को देखते हुये गोविन्दी के खेत में सरदोपराव जी टाटा ट्रस्ट के सहयोग मेढ़बन्धी एवं समतली करण का कार्य कु0 16037 का काम करवाया गया जिससे पहले वर्षा जल बहकर चला जाता था और अब 2970 घन मी0 पानी स्टोर हो रहा है। जिससे निरन्तर पेदावार में बढ़ोत्तरी हो रही है।

वर्ष 2012–2013 में खरीफ फसल में उर्द 60किग्रा0 तिल –15किग्रा0 व रबी फसल गेंहूॅ –12 कुन्टल मटर 1•5 कुन्टल सरसों 50 किग्रा0 निकला तथा आधे वीघे में गन्ने की फसल की बुबाई की गई ।वर्ष 2013–14 में खरीफ फसल में कुछ नही निकला रबी फसल में चना 40 किग्रा0 मटर –3 कुन्टल गेंहूॅ 13 कुन्टल सरसों

60 किग्रा0 तथा गुड़ 1•5 कुन्टल निकला तथा जिसमें 2000 रू0 का 1 कुन्टल गुड बैचा तथा 2 कुन्टल मटर 4600 रूपये की इस वर्ष बेची जिसमें तार खरीदा खेत की सुरक्षा हेतु ।

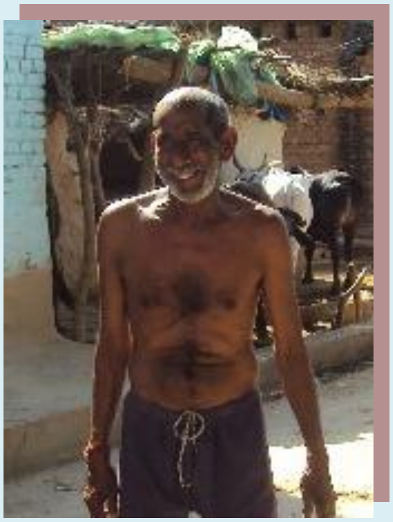

इस प्रकार से निरन्तर बढ़ रहे उत्पादन से गोविन्दी ने तार खरीदा और अपने परिवार के वर्ष भर के लिये खाद्यान्य की पूर्ति के लिये गेंहूँ का उत्पादन किया ।

इसके अलावा गोविन्दी ने कृषि तकनीकी का प्रयोग अच्छी प्रकार से किया और मटर का S.R.I. से प्रयोग किया गया तथा 6 किग्रा0 में पिछले वर्ष 65 किग्रा0 मटर को पैदा किया तथा गोविन्दी ने इस वार 1 वीघा में कम बीज दर के मटर में प्रयोग किया और 1 वीघा में 13 किग्रा0 बीज बोया और 2कुन्टल पैदा किया ।इसके अलावा गोविन्दी भी कृषि में निरन्तर आय बढ़ रही है तथा वह फसल चक् के अनुसार एवं मिश्रित खेती कर रहा है। तथा खेती के महत्व को समझ कर छोटी –छोटी मेढ़ो की सुरक्षा कर रहा है। तथा इसके महत्व को अन्य किसानों को समझा रहा है।

केस स्टडी–4

नाम –मनीराम अहिरवार **रकवा –3•25 एकड़**

गांव –कुटरा **विकास खण्ड जैतपुर** **जनपद –महोबा**

मनीराम अहिरवार के खेत है तो नाले के पास किन्तु फिर भी जमीन से उत्पादन नहीं निकलता था कारण जमीन का ऊबड़ –खाबड़ होना सिंचाई करता था और सारा पानी नाले में चला जाता था क्योकि खेत पर मेढ़ नहीं थी । तथा 1 एकड़ जमीन बर्बाद पड़ी थी जिससे कुछ नहीं निकलता था कारण टीले नुमा थी जिस पर जुताई नहीं हो पाती थी । पहले लागत ज्यादा आती थी और उत्पादन वर्षा पर निर्भर था उत्पादन ठीक न होने के कारण किसान मनीराम खेत में कम रूचि लेता था वर्ष 2011–12 में सरदोराव जी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से खेत में मेढ़बन्धी एवं समतलीकरण का कार्य 30483कु0 का करवाया गया जिससे जो पानी उपजाऊ मिट्टी को लेकर बह जाता था वह अब खेत में कम रहा है अब खेत में 3510घन मी0पानी स्टोर हो रहा है जिससे उपजाऊ क्षमता बढ़ रही है ।जिससे निरन्तर उत्पादन बढ़ रहा है । पहले बीज निकलना मुस्किल था और अब उत्पादन बढ़ रहा है। जिससे मनीराम अब परिवार सहित खेती को मन से कर रहा है तथा कृषि की नई तकनीकि से बीज शोधन एवं S.R.I. विधि से चना आदि की फसल कर रहा है। तथा कम बीज दर का प्रयोग कर रहा है।

पहले रकवा देखने में तो 3•25 था लेकिन उत्पादन केवल 2•25 में लेता था कारण 1 एकड़ जमीन बर्बाद पड़ी थी । अब पूरे रकवा में फसल कर रहा है। पिछले वर्ष 2011–12 में मनीराम ने उर्द 40 किग्रा0 तिल 20 किग्रा0 व रबी फसल में गेंहूँ –8 कुन्टल, मटर–50 किग्रा0 चना –2 कुन्टल ,सरसों–50किग्रा0 व वर्ष 2013–14 खरीफ में कुछ नहीं निकला एवं रबी फसल में गेंहूँ –14 कुन्टल सरसों –1 कुन्टल ,जवा –1•5 कुन्टल ,मटर –1•5 कुन्टल निकला।

मनीराम के परिवार के खाद्यान्य की पूर्ति पहले कृषि से नही हो पाती थी क्योंकि मनीराम को 1 वर्ष में 20 कुन्टल गेंहूँ लगता लेकिन अब 14 कुन्टल गेंहूँ सहित अन्य फसल पैदा कर रहा है।

मनीराम फसल चक्र के अनुसार खेती कर रहा है। तथा मिश्रित फसल का प्रयोग कर रहा है। जिससे निरन्तर उत्पादन बढ़ रहा है।

मनीराम खेती के साथ–साथ मजदूरी भी करता है। तथा ईंट का भट्टा लगा लेता है जिससे अतिरिक्त आमदनी से मनीराम ने 2 बकरी 9 हजार की खरीदीं तथा एक कमरा बनबाया ।

मनीराम कहता है कि पहले भोजन की पूर्ति में ही सारा रूपया खर्च हो जाता था लेकिन अब जो बचत होती है। उसका प्रयोग हम कर रहे है। जिससे बकरी तथा मकान बनवाया है।

****